षष्ठ अध्याय -

मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहों की समस्याओं का अनुशीलन

षष्ठ अध्याय
मैत्रेयी पुष्पा के 'चिन्हार' और 'ललमनियाँ' कहानी संग्रहो की समस्याओं का अनुशीलन

प्रस्तावना -

मनुष्य जन्म के साथ-साथ समस्याओं का जुडो होता है। जीवन जीने की लालसा के कारण मनुष्य को अनेक प्रश्नों के घेरे में अटकना पडता हैं। भौतिक वैज्ञानिक अनुसन्धानों के परिणाम स्वरुप समस्याओं का भी विकास होने लगा वैसे समस्या का घेराव व्यक्ति को केवल बाह्य रूप में नहीं बल्कि भीतरी रूप में भी झुलसा दे रहा है। समस्या के घेराव केवल एक व्यक्ति नहीं पूरे समाज, देश एवं विश्व में व्याप्त है। नालंदा विशाल शब्द सागर के अनुसार 'समस्या' का अर्थ है ''वह उलझनवाली विचारणीयबात जिसका निराकरण सहज में न हो सके। कठिन या विकट प्रसंग।''[1]

अभिनव पर्यायवाची कोश के अनुसार 'समस्या' का अर्थ है - ''कठिन विषय या प्रश्न या प्राब्लेम।''[2]

समस्या के संदर्भ में डॉ. विमल भास्कर लिखते हैं - ''समस्या आज एक कठिन उलझन के सिवाय और कुछ नहीं है। मानव इस उलझन की सुलझन में इस तरह उलझ गया है कि सुलझन को पाने के लिए हाथ-पाँव हिलाने पर भी उसके हाथ में उलझन के सिवाय कुछ भी नहीं आ रहा है।...... मनुष्य इच्छाओं का दास है और इच्छाएँ सदैव अतृप्त रहती है। यही अतृप्ति कालांतर में जीवन में समस्याओं का जाल-सा फैला देती है। आज युग में तो समस्याएँ जीवन के लिए इतनी बढ गई हैं कि उनके कारण जीवन स्वयं एक समस्या हो गई है।''[3]

6.1.1 नारी समस्या

भारतीय समाज में शताब्दियों से उपेक्षित नारी, पुरुष के अत्याचारों से पीडित रही है। उसके स्वतंत्र अस्तित्व की किसीने कल्पना तक नहीं की। निर्जीव पदार्थों के समान उसका क्रय विक्रय होता रहा है। वह असमर्थ होने के कारण अत्याचार सहती रही है। समाज में उसका स्थान 'भोग्यपात्र' रहा है। आज समाज अत्यन्त तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है इस कारण नारी ने अपनी अलग पहचान बनायी है। इस बदलते समाज में नारी का स्थान महत्वपूर्ण है। फिर भी पुरुष - प्रधान समाज व्यवस्था के कारण नारी समस्या जटिल बनती गयी है। मैत्रेयी पुष्पा ने आज की नारी की सामाजिक स्थिति और मानसिकता को बडी गहराई से चित्रित किया है।

मैत्रेयी पुष्पा ने निम्न, मध्य और उच्च वर्ग की नारियों की समस्याओं पर अपनी लेखनी चलायी है। आज चाहे पढी लिखी, कामकाजी महिला हो या घर की चार दीवारों में रहनेवाली नारी हो सभी वर्ग की नारियों को विभिन्न समस्याओं का सामना करना पडता है। अतः मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में निम्नलिखीत नारी समस्याओं का चित्रण किया है।

6.1.1.1 नारी द्वारा नारी उपेक्षा की समस्या

'भँवर', कहानी ' चिन्हार 'कहानी संग्रह से ली हैं। पुरुष की अपेक्षा नारी में ईर्ष्याभाव अधिक होता है। दो नारियाँ आमने सामने आती हैं तो यह भाव प्रबल हो उठता है। इस कहानी में केशव की दो पत्नियों के बीच उपेक्षा भाव के दर्शन होते हैं। विरमा को बच्चा न होने के कारण विरमा के पति द्वारा दूसरी शादी करना, विरमा और सुमन के बीच बार-बार झगडे होना केशव द्वारा प्रथम पत्नी विरमा पर ध्यान न देना, विरमा द्वारा दवाई के लिए पैसे माँगने पर केशव द्वारा बीना खाना खाये ऑफिस जाना, विरमा के प्रति इर्ष्या भाव से सुमन कहती है, "मरी नहीं जा रही थी। उन्हें कुछ हो गया तो हम तुझे रोएँगे क्या ? तेरा क्या है, अकेली नठिया।"[4]

इस तरह से एक नारी दूसरी नारी के साथ कठोर व्यवहार करती है, तब नारी के द्वारा नारी की ईर्ष्यावत उपेक्षा यह समस्या उभरती है।

'तुम किसकी हो बिन्नी ?' कहानी 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह से ली हैं। एक नारी, स्त्री होकर अपने आपको लडका चाहिए लडकी नहीं कहनेवाली नारी चित्रण के द्वारा नारी का ही नारी की तरफ देखने की प्रवृत्ति को लेखिकाने इशारा किया है। इस कहानी में बिन्नी की माँ को दो लडकियों के बाद लडका चाहिए था लेकिन बिन्नी का जन्म हुआ। इस हादसे को वह सह नहीं सकी। उसने अपनी ही पुत्री का स्वीकार नहीं किया। इतनाही नहीं तो उसे वह बहुत मारती-पीटती है। उसे जरा भी स्नेह नहीं देती। यहाँ पर लेखिकाने माँ-बेटी के रूप में नारी का नारी के प्रति ईर्ष्यावत उपेक्षित भाव दिखाया। चाहे वह माँ - बेटी के रूप मे हो या कौन से भी रूप में हो। यहाँ लडकियों के प्रति नारियों द्वारा नफरत दिखाने की परंपरा पर प्रकाश पडता है और युग - बोध पर प्रकाश पडता है।

6.1.1.2 पुरुष द्वारा नारी उपेक्षा की समस्या

'फैसला ' कहानी 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह से ली हैं। प्रस्तुत कहानी में पुरुष नारी के व्यक्तित्व के साथ खिलवाड करता है। नारी का भी अपना व्यक्तित्व होता है, उसे भी मन और भावना होती है। वह अपने व्यक्तित्व का विकास करना चाहती है लेकिन पुरुष प्रधान संस्कृति में उसे नाममात्र अधिकार देकर उसे काम करने से रोका जाता है। प्रस्तुत कहानी में बसुमती रामसिंह को न्याय देने के लिए पंचायत में जाना चाहती है , लेकिन रनवीर उसे कटुता भरे शब्दों में स्पष्ट कहता है कि, "सुनले ! और समझ ले अपनी औकात ! मजबूरी में खडी करनी पडी तूझे। मैं दो-दो पदवी नहीं रख सकता था एक साथ। सोचा था पत्नी से अधिक भरोसे मन्द कौन ...... ।"[5] इस तरह से यहाँ पर नारी को उसके अधिकारों से वंचित रखकर उसका मानसिक शोषण किया जाता है। अत: शोषण की समस्या निर्माण होती है। आज राजनीति में नारी आरक्षण को मान्यता मिल चुकी है परंतु

नारी को नाममात्र पद देकर पूरा अधिकार नारी के नाम पर पुरुष ही पाते हैं, इस समय बोध की स्थिति पर यहाँ प्रकाश डाला है।

6.1.1.3 नारी के दैहिक शोषण की समस्या

'बहेलिये' कहानी 'चिन्हार' कहानी संग्रह से ली है। इस कहानी में जमींदार लोक पैसा और शक्ति के बलपर गरीबों की आवाज बंदकर देते हैं। फिर भी कुछ लोग उनसे संघर्ष करना चाहते है लेकिन उनका वह शोषण करने का प्रयत्न करते हैं जैसे इस कहानी की गिरजा भोली को न्याय दिलाना चाहती है। भोली पर साहुकार के लडके सुमेर ने जबरदस्ती की है और सुमेर का पाप उसके पेट में पल रहा है यह पता चलने पर भोली ने आत्महत्या की है, गिरजा सुमेर को सजा दिलाना चाहती है लेकिन पुलिस से उसकी मिली भगत के कारण गिरजा कुछ भी नहीं कर सकती।दरोगाजी सीधा आत्महत्या का केस बना देते हैं, और भोली को न्याय नहीं मिलता। वह पुरुष की वासना का शिकार बन जाती है। यहाँ पर नारी का शोषण किया हुआ दिखाई देता है। भोली को न्याय देनेवाली गिरजा कुछ भी नहीं कर पाती। यहाँ दुर्बल नारियों पर जमींदारों द्वारा होनेवाले शारीरिक, दैहिक शोषण की समस्या पर मैत्रेयी ने प्रकाश डाला है।

'केतकी' कहानी में बलात्कार के संदर्भ में नारी निर्दोष होकर भी सदा से ही इस संबंध में पीसती आयी है। ऐसी पीडित नारी को समाज की सहानुभूति कभी नहीं मिलती किंतु बदलती परिस्थिति में समाज में उसे न्याय का प्रयत्न हो रहा है, लेकिन उसका पति उसे अस्वीकार करके अपने परिवार से सदा के लिए त्याग कर चल पडता है। केतकी के पति श्रीकांत से मिलने उसके ससुर श्रीगोपाल के गुरुकुल जाने के बाद उसके पश्चात् केतकी पर गंधर्व सिंह जबर्दस्ती करता है। उसके छोटे देवर मणि को गंधर्वसिंह कहता है - ''इस बात का किसी से जिक्र नहीं करना। पंडित के कितने ही राज अपने सीने में दफन किए

बैठा हूँ।'' ''खुली धमकी देकर गंधर्वसिंह घर के बाहर निकल गए।''[6] इस पर केतकी पंचायत में खुले आम गंधर्वसिंह का नाम लेती है। उस पाशान को सजा होती है लेकिन श्रीकांत उसे और उसके परिवार वालों को सदा के लिए त्यागकर वापस चला जाता है। अत: केतकी को श्रीकांत और गंधर्वसिंह के शोषण का शिकार होना पडता है।

6.1.2 नारी शिक्षा समस्या

शिक्षा मानव को मानव बनाती है। शिक्षा की जरुरत जीवन निर्माण के लिए आवश्यक है। नारी को शिक्षा से वंचित रखना याने पूरे परिवार को अंधकार में रखना है। एक नारी शिक्षित बनती है, तब वह पूरे परिवार को शिक्षित बना सकती है। आज नवयुवकों में शिक्षित नारी की माँग हो रही है। अगर लडकी शिक्षित होगी तो उसका ब्याह आज अच्छे घरों में हो रहा है।

'बेटी' कहानी में इस तथ्य को हम देख सकते हैं। इस कहानी में वसुधा और मुन्नी दोनो पढती हैं। मुन्नी की माँ बीच में ही उसकी पढाई बंद करती है। मुन्नी के भाई स्कूल में जाते हैं तो वह अपने भाइयों का सारा काम करती है। मुन्नी अपनी माँ को पढाई बंद करने पर जुबान लडाती है, उस वक्त उसकी माँ उसे कहती है, ''चुप होती है कि नहीं ? बहुत जबान चल गयी है तेरी। तू लडकों की बराबरी करती है। बेटे तो बुढापे की लाठी है हमारी, हमें सहारा देंगे। तू पराए घर का दलिहार। तेरी कमाई नहीं खानी हमें ... कह दिया, कान खोलकर सून ले।''[7] यहाँ बेटा-बेटी भेदभाव के तहत नारी को शिक्षा देने का समाज का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। मुन्नी की पढाई का खर्चा उसके माता-पिता को जादा नहीं है फिर भी उसकी पढाई बंद की जाती है, इससे नारी की शिक्षा समस्या के रूप में उभरकर सामने आ जाती है।

6.1.3 उच्चवर्गीय शिक्षित नारी की समस्या

जीवन निर्माण के लिए शिक्षा की जरुरत है। नारी को शिक्षा देना आज एक आवश्यकता मानी ताजी है लेकिन पढते समय उसे कौन-कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पडता है, यह हम निम्नलिखित कहानी में देखते हैं -

'अब फूल नहीं खिलते' शीर्षक कहानी में आज नारी की तरफ समाज का देखने का नजरिया बदलने के कारण नारी आज उच्च शिक्षा ले रही है, लेकिन उच्च शिक्षा लेते समय उसे अनेक अत्याचारों का सामना करना पड रहा है। इस कहानी की नायिका झरना कॉलेज में पढ रही है। वह अपने वर्ग में पढनेवाली अकेली लडकी होने के कारण क्लासरुम के लडके उसे बहुत तंग करते हैं, लेकिन उनको वह सह लेती है। एक दिन उसके प्रिंसिपल उसकी इज्जत से खिलवाड करने का प्रयत्न करते हैं। शिक्षा क्षेत्र के जिम्मेदार व्यक्ति की इस घिनौनी हरकत से यह लडकी संघर्ष करती हुई कहती है,

"सर .... प्लीज छोडिये !"

"उफ् .... छोडिये न सर !"

वे उसी अवस्था में खडे हँसने लगे, "डर गयी ?"

गुंजलक की कसी हुई गिरफ्त में बँधी खिंचने लगी, खिंचती गयी और भरपूर जोर से खींचती ले गयी अपने गुरुवर को।"[8] 'झरन' उस समय अपने आपको बचाकर बाहर निकल पडती है, लेकिन उसके कपडे फट जाते हैं। यहाँ पर स्त्री को शिक्षा लेते वक्त कौन-कौन से संकटों का सामना करना पडता है, यह लेखिकाने स्पष्ट शब्दों में दिखाने का प्रयास किया है। शिक्षा क्षेत्र में पनपनेवाले नइ मगर मच्छ पर पुष्पा ने बडा व्यंग्य किया है।

6.1.4 मातृत्व की समस्या

भारतीय संस्कृति में शादी एक पवित्र बंधन माना जाता है। शादी के बाद हर नारी माँ बनना चाहती है। क्यों कि जब तक वह माँ नहीं बनती तब तक वह अपना जीवन सफल नहीं मानती, खुद को पूर्ण स्त्री नहीं समझ सकती।

चिन्हार संग्रही कहानी **'भँवर'** में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया है। विवाह एक स्त्री-पुरुष संबंधों के सामाजिक संस्कार का नाम है। विवाह के बाद हर स्त्री का एक सपना होता है कि वह माँ बने। इस सृष्टि में मातृत्व की भावना सहज और प्राकृत है। स्त्री को बच्चा न होने पर उसकी मानसिक दुर्दशा, विवशता का वर्णन इस कहानी में देखने को मिलता है। बच्चे के अभाव में नारी मानसिक अंतर्द्वंद्व का शिकार बनती है, वह अपने दांपत्य जीवन में भी अलगाव, अजनबीपन की स्थिति को अनुभव करती है। उसे पति के प्यार से और पत्नीत्व के अधिकार से वंचित रहना पडता है। इस कहानी में विरमा मातृत्व के लिए भूखी है। उसके प्रथम बच्चे की मौत होने के उपरात्न उसकी मानसिक स्थिति का चित्रण देखने योग्य है - ''दिन-महीने गुजरने लगे। विरमा गिनती रही। महीने खिंचकर द्रौपदी के चीर-से होते चले गए - लम्बे-फिर बरस में बदल गए। प्रतीक्षा अनन्त हो गई-असीमित''[9] विरमा माँ बनने के लिए तरस रही है लेकिन उसे पांच साल तक दूसरा बच्चा नहीं होता। उसकी माँ बनने की लिए तडफ दिखाई देती है। इसी से मातृत्व की समस्या सामने आ जाती है।

6.1.5 प्रेम की समस्या

प्रेम की परिकल्पना कालातीत है, सदियों से चलता आ रहा यह प्रेम आज भी जिंदा है, और कल भी रहेगा। समाज की निर्मीती से प्रेम का निर्माण होता आ रहा है। एक-दूसरे के प्रति प्रेम का आकर्षण जात-पात, ऊंच-नीच, समाज का विरोध सभी को लाँघकर, सच्चा प्रेम सफल बन जाता है। प्रेम के दौरान धर्म, जाति-पाँति तथा श्रेणी भिन्नता का विचार न करनेवाले युवक-युवतियों के जीवन में समस्याएँ पैदा होती हैं। इसके बारे में डॉ. बिंदु कहते है, ''स्त्री-पुरुष का आकर्षण एक प्राकृतिक सत्य है। इसी आकर्षण पर सृष्टि का विकास संबंधों में प्रेम तत्वों के अनिवार्य माना गया है।''[10] मैत्रेयी पुष्पा की कुछ कहानियों में प्रेम समस्या सूक्ष्म रूप में नजर आती है।

'चिन्हार' कहानी संग्रह की कहानी 'सहचर' में यह स्पष्ट होता है। सफल प्रेम कहानी के रूप में यह कहानी हमारे सामने आती है। हमारे समाज में शादी एक पवित्र बंधन है। शादी के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे के लिए सदा बने रहते हैं। उन दोनों का एक-दूसरे के प्रति प्रेम बंसी और छवीली के माध्यम से दिखाई देता है। छवीली को गेंगरीन होने से दादाजी उसे मायके भेज देते हैं, और बंसी का पुनर्विवाह करना चाहते हैं। यही हमारे सामने समस्या बनकर आती है लेकिन सच्चा प्रेम रास्तों में कितने भी काँटें आए उनको पार करके आगे चला जाता है। वैसा ही बंसी शादी के मंडप से अपनी छवीली के पास भागकर चला जाता है। इस कहानी में पत्नी की बीमारी में उसकी बीमारी को दूर करने की बजाय, उसे तलाक देकर या उसका परित्याग करके पुरूषों द्वारा दूसरा विवाह संपन्न किया जाता है। लेखिकाने यहाँ बंसी के माध्यम से श्रध्देय प्रेम को दिखाकर पत्नी की बीमारी के कारण पुनर्विवाह को ठुकरा दिया है।

'मन नाँहि दस-बीस' शिर्षक कहानी में अंतर्जातीय प्रेम समस्या को यथार्थ दृष्टि से देखा गया है। एक सफल प्रेम असफलता की मोड पर आता है और फिर एक बार सफलता की ओर बढता दिखाई देता है।

इस कहानी में साहूकार की बेटी चंदना और हरिजन टोले का कडका स्वराज दोनों बचपन से एक-दूसरे के साथ रहते हैं। बचपन का साथ जवानी के दहलीज पर प्यार बनकर संवरने लगता है। सारे गाँव में दोनों बदनाम हो जाते हैं। उस समय स्वराज को समझाकर कहा जाता है, "स्वराज बेटा, सोच! अपनी जाति - पाँति अलग है। लाला का नमक खाया है हमने, उसके चाकर हैं हम। चन्दना नादान ठहरी, तू ही सोच समझकर चल सुराज! तू बडा है।"[11]

"बडी जाति की है सुराज वह। हम हरिजन चमार ठहरे बेटा! अपनी औकात में ही रहें तब ठीक।"[12] अत: यहाँ पर अंतर्जातीय प्रेम समस्या को सूक्ष्म दृष्टि से सामने रखकर लेखिका यह स्पष्ट करना चाहती हैं कि प्रेम जाति - बिरादरियों में नहीं बांटा जा सकता।

'पगला गई है भागवती' शिर्षक कहानी में अनुसुइया ने अंतर्जातीय विवाह किया है। उसके माता-पिता ने शादी करने के बाद उससे कोई संबंध प्रस्तापित नहीं किए। इतना ही नहीं तो उसके भाई के शादी में उसे बुलाया भी नहीं और शादी में कोई इसे याद भी नहीं करता। उसे प्रेम विवाह करने की इतनी बडी कीमत चुकानी पडी कि कोई याद भी नहीं करता इसी कारण यहाँ पर अंतरर्जातीय प्रेम विवाह करना यह एक समस्या बनकर आती है जिसे समाज स्वीकारता नहीं एक प्रेम समस्या बन जाती हैं।

6.1.6. अकेलेपन की समस्या :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहते हुए तथा अपने सगे सम्बन्धियों के होते हुए भी मानसिक तनाव के कारण मनुष्य कभी-कभी अकेलापन महसूस करता है। परिस्थिति के दबाव में आकर उसमें घुटन-सी पैदा होती है। महानगरीय परिवेश में यह अकेलेपन की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। भीड में मनुष्य अपने आप को अकेला महसूस करता है। मैत्रेयी पुष्पा की कुछ कहानियों में अकेलेपन की समस्या रेखांकित है।

'चिन्हार' कहानी संग्रह की कहानी 'अपना-अपना आकाश' में वर्तमान युग में व्यक्ति अकेला बनता जा रहा है। भीड में भी वह अपने आपको अकेला महसूस करता है। इस कहानी में अपने बेटों के पास माँ रहने शहर जाती है, परंतु माँ के साथ समय बिताने के लिए किसी के पास भी वक्त नहीं है। उस समय अकेलेपन की समस्या से पीडित माँ की स्थिति देखिए - "वे सारा दिन बैठी ऊबती थीं, उबसियाँ लेती रहतीं, सोचती रहती ..... गाँव में मेरा दिन भी कैसी कुलाँचे भरते हिरन-सा भागता आता और आँखों से ओझल हो जाता। यहाँ तो पहाड सा दिन, जुग सी रात, कोई क्या करे ? कैसे काटे .... ? ड्रांइग रूम में टी.वी., वी.डी.ओ. चलता रहता तो वहाँ जा बैठती"[13] यहाँ पर सबके होते हुए भी माँ को अकेलेपन काटने को दौडता है। इससे अकेलेपन की समस्या उभरकर सामने आती है।

'ललमनियाँ' कहानी संग्रह की कहानी **'सिस्टर'** में डोरोथी डिसूजा ने अपने पिता के कारण शादी नहीं की थी। उसके पिता को उसके रहने की चिंता लगी रहती उसी कारण डिसूजा ने पिता की इच्छा के खातिर बडा मकान बनवाया था लेकिन पिता कि मौत हो जाने पर वह अकेली उस मकान में रहने लगी है, उन्हे उस मकान में वह अकेलेपन की पीडा से संत्रस्त होकर अपने आप से प्रश्न पूछती है, " क्यों रह गयी अकेली ? वृध्द अपाहिज पिता के कारण घर नहीं बसाया था नर्स के व्यस्त जीवन के कारण भूल गयी, गृहस्थी का ख्याल?"[14] इस तरह से डिसूजा को अकेलापन काटने को दौडता है लेकिन वह कुछ भी करत नहीं पाती है।

'बोझ' कहानी में छोटा अक्षय माता-पिता के साथ रह रहा है। माता-पिता जब उसे क्रेष में छोडकर काम पर जाते हैं और अक्षय में उन दोनों की राह में अकेला बैठा रहता है उस समय उस छोटे बच्चे की मासुमीत में अकेलापन की समस्या उभरकर सामने आती है - "धूप चली गयी। अब अँधेरा भी होने लगा। सारे बच्चे तो कब के चले गये। आज पापा क्यों नहीं आये ? रात में आएँगे क्या पापा ? अक्षय क्रैश की भाँय-भाँय करती इमारत पर नन्ही निगाह घुमाने लगा।"[15] अंत : माता-पिता काम पर जाने के उपरांत बच्चों में अकेलापन बढता हुआ अंकित है, जो हमें आज भी देखने को मिलता है।

'छाँह ' में रिश्तों में स्थित खोखलेपन के दर्शन होते हैं, इस खोखले रिश्तों में अकेलेपन की सजा ददुआ को निभानी पड रही है। वेदू की माँ मर जाने पर ददुआ अपने आपको दो बेटे होने पर भी अकेला समझता है उसकी अकेलेपन की पीडा को देखिए, "जब से वह नहीं रही, ददुआ फिर टुकडों-टुंकडों में बिखर गये। सिर के सूत-से बालों पर हाथ फेरते, भीतर उठती हिलोर पर काबू नहीं रख सके। धनी धुंद फैल गयी आखों में।"[16] ददुआ के अकेलेपन को बढाने का एक कारण है, वेदू की परवारिश कौन करेगा ? इसकी चिंता ददुआ को है उनके दोनों बेटों का उनकी तरफ बिलकूल ध्यान नहीं हैं। वह अकेले सोचते रहते। इसीसे

अप्रत्यक्ष रूप में ददुआ को अकेलापन महसूस होता है और अकेलेपन की समस्या देखने को मिलती है।

6.1.7 दाम्पत्य की समस्या -

पारिवारिक जीवन का मूलाधार दाम्पत्य जीवन है। नर-नारी का विवाह ही परिवार की आधारशिला है। परिवार में नारी के महत्व को बताते हुए डॉ. सूतदेव हंस लिखते हैं - "जिननी, जाया और जीवन -संगीनी जैसे रूपों में वह परिवार की संचालिका है।"[17]

पति -पत्नी का पारस्पारिक प्रेम ही जीवन में हँसी -खुशी के फूल खिलाता है। मगर एक दूसरे को समझने की क्षमता यदि नहीं हो तो दाम्पत्य संबंध में तनाव निर्माण हो सकते हैं। अविश्वास, पत्नी की तथा, पति की उपेक्षा एक दूसरे को समझने की कभी आदि कारणों के कारण दांपत्य जीवन में दरारें पड सकती है। इतना ही नहीं तो कभी-कभी यह संबंध खत्म होने की भी नौबत आती है। अत: दाम्पत्य जीवन में एक - दूसरे को समझ लेना बेहद जरूरी होता है। इसमें मैत्रेयी पुष्पा की चिन्हार कहानी है।

'चिन्हार ' इस कहानी में सरजू और चंद्रप्रकाश दोनों पति-पत्नी है। सरजू प्रेममयी और निष्ठावती नारी है, उसका पति धूर्त और लम्पट है। सरजू के पेट में जब कनक थी उस समय चंद्र प्रकाश की मृत्यु एक जहरीली शराब पीकर छुअी है। शराबी पति के कारण सरजू के दांपत्य जीवन में तनाव की स्थितियाँ निर्माण हो चुकी थी।

6.1.8 टूटते हुए संयुक्त परिवार की समस्या -

मनुष्य की अहम भावना, वैयक्तिक महत्वकांक्षा, व्यक्तिगत संपत्ति और पारिवारिक संघर्ष के कारण आज परिवार टूट रहे हैं। अंत: राम आहूज कहते हैं, "परिवार में विघटन की स्थिति तब भी होती है जब सदस्यों में भूमिकाओं में संघर्ष प्रारंभ हो जाये, जैसे पति-पत्नी में, माता-पिता व बच्चों में, सास-बहू में या भाई-भाई में "[18]

'छाँह' कहानी में पिता-पुत्र के बीच का संघर्ष अंकित है। ददुआ अपनी पुत्री के मरनोंपरांत उसके पुत्र वेदु को अपने साथ लाना, उस वक्त उपनी गृहस्ती में व्यस्त दो पुत्रों के साथ झगडा करना ददुआ का अपने पुत्रों के साथ रहना, अपनी रोजी रोटी के सवाल का हल खुद ही ढूँढ निकाला फिर भी पुत्रों करे वेदू अपने घर में आना पसंद न होन, उस वक्त उनके पुत्र जमीन का बटवारा करना चाहते हैं। दादा जी उस जमीन के चार हिस्सों में बटवारा करना चाहते हैं। अंतः उनके पुत्रों को यह बिलकूल पसंद नहीं, इसी कारण वह अपने पिताजी से झगडा मोड लेते हैं और यहाँ पर ही संयुक्त परिवार के टूटन की समस्या उत्पन्न होती है। पुत्रों को अपने ददुआ को ना समझ लेना यही पर यह समस्या उभरकर सामने आती है।

6.1.9 सामाजिक संकीर्णता की समस्या -

'आक्षेप ' कहानी में समाज का नारी की ओर देखने का नजरिया बदल गया है। आज कोई औरत किसी की मदत करे या किसे पुरूष के साथ बाहर चली जाए तो उसे एक गिरी हुई औरत ही माना जाता है। आज के समाज में किसी की मदद करना एक अच्छी बात है ऐसा कहना बिलकुल गलत लगता है इस कहानी में इसी तथ्य पर चिंतन किया गया है कहानी की नायिका रमिया - गाँव के हर इंसान की मदद करती है, वह दिन - रात कुछ भी नहीं देखती, हर हालत में मदद के लिए दौडकर चली जाया करती, किसी की भी मदद करना रमिया की प्रवृत्त है। लेकिन वह जिस उदार मन से लोगों की मदद करती उसी हिसाब से समाज उसे नहीं देखता था। रमिया अच्छी औरत होने पर भी उसे लोग एक बिगडी हुई औरत कहते थे इससे यहीं पर सामाजिक संकीर्णता की समस्या उत्पन्न होती है। समाज सेवा में समर्पित औरत पर लांछन लगाने की समाज की दृष्टी पर यहाँ व्यंग्य किया गया है।

6.1.10 खोखले दिखावटी रिश्तों की समस्या -

आज दुनिया में इन इनसानियत नाम की कोई कींमत ही नही रही। हर व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ती का अपने स्वार्थ के लिए उपयोग करता है और बाद में उसे जो नाम दिया हुआ होता है, उसका हक उसे नहीं तो उसे याद भी नहीं करता।

'सिस्टर ' कहानी में सिस्टर डिसूजा ने सुरशचंन्द की निष्काम मन से सेवा की थी। वह सुरेशचंद को रोज इंजेक्शन लगवाने के लिए उनके घर जाया करती थी। एक दिन सुरेशचंद डिसुजा से कहते है कि, "हाँ डोरो थी बहन, तुम मेरी बहन बनाकर भेजी हो भगवान ने कोई बहन नहीं थी न "[19] डिसूजा को उस घर में अब अपनापन मिलने लगा था। कुछ दिनों बाद जब सुरेशचंन्द के बेटे की शादी आती है , शादी में जब आरती उतारने की रस्म आती है , उस वक्त डिसूजा को न बुलवाकर उसकी बहन सावित्री को बुलाया जाता है और डिसूजा का जिक्र भी नहीं किया जाता है। इससे हमें रिश्तों का दिखावटीपन दिखाई देता है। खोखले दिखावटी रिश्तों की समस्या सामने आती है।

6.1.11 निम्नवर्ग की समस्या -

हमारे समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग ऐसे दो वर्ग हैं। उच्च वर्ग निम्म वर्ग का शोषण करता आ रहा था। इतनाही नहीं तो वह निम्नवर्ग के लोगों को छूने भी नहीं देता था। सिर्फ उनसे वह काम करवा लेता था। आज यह परिस्थिति बदल गयी है। लेकिन लोगों के मन में आज भी वह अपने हैसियत के नहीं है यह भाव जागृत है, और वही भाव मैत्रेयी पुष्पा ने इसमें रेखांकित करने का प्रयास किया है।

ललमनियाँ कहानी में मौहरों ललमनियाँ का नाच बारात में जाकर करती और अपना पेट भरती। एक दिन जोगेश उसका नाच देखता है और मौहरो से शादी करके उसे अपने घर लाता है। जोगेश के माता-पिता मौहरो को दुत्कारते हैं और कहते हैं कि,

"कहाँ से उठाकर लाया है इस नटिनी को ? इसका नाच पसंद आ गया ? पर हमें भी पता लग गया है कि नाचकर ही पेट भरती है, भीख माँगकर........ तू अंधा हो गया तो हम भी आँखो पर पट्टी बाँधले ?"[20]

मौहरीया को वह घर की चौखट तक छूने नहीं देते उसे वहाँ से ही वापिस भेज देते हैं। यहाँ पर हमें साफ दिखाई देता है कि, उच्चवर्ग के लोगों ने निम्न-वर्ग की बहू को स्वीकारा नहीं।

6.2.1 भ्रष्टाचार की समस्या

देश को आजादी मिलने के बाद लोगों का जीवन सुखी और समृध्द होगा ऐसे सपने लोगों ने देखे थे। लेकिन आजादी के बाद सरकार और सरकारी अधिकारीयों के भ्रष्टाचार से साधारण लोगों को जीवन जीना मुश्किल हुआ है। भ्रष्टाचार तथा शोषण की समस्या वर्तमान समस्या है। यह समस्या सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक जीवन में पर पायी जाती है। आज अर्थ को महत्वपूर्ण माना जाता है। रुपयों के सामने सच्चाई, ईमानदारी, धर्म, नीति सबकुछ खोखली बन गयी है। हर व्यक्ति चाहता है कि उसका जीवन सुखी हो इसलिए वह रुपयों को पाने के लिए भ्रष्टाचार कर रहा है।

'बहेलिये' कहानी 'चिन्हार' कहानी संग्रह से ली है। सरकार, सरकारी अधिकारी और पूंजीपति गरीबों का शोषण कर रहे हैं। भ्रष्टाचार की स्थिति देखकर मैत्रेयी पुष्पा जी ने इस कहानी में इसका यथार्थ चित्रण किया है - इस कहानी में सुमेर भोली पर जबरदस्ती करता है और भोली आत्महत्या करती है। साधारण सी जाँच पडताल करके दरोगाजी सीधा-सादा आत्महत्या का केस बना देते है। उस समय गिरजा कहती हैं ,

"दरोगाजी , केस बन्द मत करिए, अभी किरिया करम नहीं किया, चीड-फाड करवाकर पता लगाइए ना ! केस आगे बढाइए। " पर कुछ नहीं सुना गया। आखिर में भोली

के अधजले शरीर को पूरा जलाकर अन्त्योष्टि कर दी। दास्तान पूरी तरह खात्म हो गयी।"[21] साथ ही मास्टर जी को भी एक दावत में जहर देकर मारा जाता है और दरोगाजी उनके पत्नी पर इसका आरोप दाखिल करते हैं। दरोगाजी मास्टरजी की पोस्टरमार्टम, रिपोर्ट ही बदल देते हैं। उस समय भी गिरजा अन्याय के प्रति आवाज उठाने के सिवाय कुछ नहीं कर पाती। इससे सरकारी कामकाजो में भ्रष्टाचार की समस्या पर प्रकाश पडता है।

'केतकी' कहानी 'चिन्हार 'कहानी संग्रह से ली है। इस कहानी में मैत्रेयी पुष्पा ने केतकी के माध्यम से भ्रष्टाचार के प्रति आवाज उठायी है लेकिन उस आवाज को भी दबाने की कोशिश की गयी है। मतलब भ्रष्टाचारी लोगों का शोषण करते हैं। वैसा ही केतकी पर और गाँव के सभी लोगों पर बहुत अत्याचार होते थे लेकिन कोई उसके प्रति आवाज नहीं उठा पा रहा था। जब केतकी पर अन्याय होता है तो वह राह नहीं पाती और कहती है कि," गन्धर्वसिंह का न्याय जहाँ हो वहाँ पुलिस का क्या काम ? क्यों है न? इस गाँव में कभी पुलिस आयी ही नहीं, क्या अच्छी बात है ! चाहे कोई फाँसी लगा ले, चाहे नदी ताल में डूब मरे। तुम्हारे विरूध्द बोलने का साहस तो सब बेच चुके हैं। एक छत्र राज है तुम्हारा अत्याचारियों ! लेकिन आँखे खोलकर देखो, आज पुलिस आ गयी है। मैं लाई हूँ पुलिस, क्यों कि मुझे तुम्हारा भय नहीं है।"[22]

इस तरह से गाँव में भ्रष्टाचार दिखाई देता है। भ्रष्टाचार को सभी देखते है लेकिन काई भी उसके प्रति आवाज नहीं उठा पाता भ्रष्टाचार को सह लेते हैं। केतकी मात्र ऐसे लोगों की अच्छी खबर लेना चाहती है।वह चेतित नारी लगती है।

'फैसला ' कहानी 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह से ली हैं। इस कहानी में भी हमें भ्रष्टाचार दिखाई देता है। बसुमती जब प्रधान बनती है उस समय वह सरकार से मिले पैसे से गाँव के लिए कुछ करना चाहती है लेकिन उन पैसों पर उसकी रनवीर हस्ताक्षर लेकर उन पैसों का अन्यत्र उपयोग करता है। साथही जब गाँव में इसुरिया को पति के साथ उसे

जाने नहीं दिया जाता और पिता के अत्याचारों से वह आत्महत्या करती है उस समय वह केस पुलिस के मिली भगत के कारण बंद किया जाता है। इतनाही नहीं तो राजनीतिक चक्रव्यूह का भेद रनवीर के माध्यम से खुलता दिखाई देता है।

'सेंध', कहानी 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह से ली है। मैत्रेयी पुष्पा ने इस कहानी के व्दारा जमीन के भ्रष्टाचार को खुला करना चाहा है। इस कहानी में गंगासिंह की जमीन चकबन्दी कानून में जाने पर उसकी माँ-सी. ओ. जी. से मिलने हरबंस के साथ शहर चली जाती है।

''उन्होंने पर्स की भीतरी जेब से कागज का फूला हुआ लिफाफा निकाल लिया। हरबस ने लपककर लिफाफा उनके हाथ से ले लिया और चुपके से सी.ओ.जी. के कोट की बडी जेब में सरका दिया। सी.ओ.जी. अचकचाने का भरपूर अभिनय कर रहे थे, ''अरे.... यह .... अपने ही आदमियों से .... ?''[23] इस तरह से ऑफिसर उन्हें अच्छी जमीन देने का वादा देकर उन्हें बिदा करता है, अत: यहाँ पर भ्रष्टाचार दिखाई देता है।

6.2.2. चुनाव की समस्या

आज जनतंत्र प्रधान देशो में ही चुनाव होते हैं। इसको बहुत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है। चुनाव में हम अपना प्रतिनिधि चुनते हैं। प्रतिनिधि के चुनने के लिए चुनाव की आवश्यकता होती है। 'एक व्यक्ति एक वोट' यही पद्धति इसमें होती है। जो वोट दिया है उसे गुप्त रखा जाता है। चुनाव की मूल संकल्पना बहुत अच्छी है, लेकिन आज इसमें भी भ्रष्टाचार हो रहा है और इसका वर्णन मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी कहानियों में मार्मिक शब्दों में किया हुआ दिखाई देता है।

'फैसला ' कहानी 'ललमनियाँ' कहानी संग्रह से ली हैं। कहानी का नायक रनवीर फिर से एक बार प्रमुख के चुनाव के लिए खडा रहता है। उस समय वह अच्छी तरह से

जानता है कि, गाँव के लोग भोले नहीं हैं , इसलिए वह गाँव के लोगों को पैसा और शराब देता है , ताकि वह उसे चुनाव में फिर एक बार बोट दे और चुनाव जित जाए। इससे चुनाव की समस्या उभरकर सामने आती है।

'हवा बदल चुकी है ' कहानी 'चिन्हार 'कहानी संग्रह से ली है । कहानी में सुजान ठाकुर का एक अच्छा गाँव का नेता होना, चुनाव के वक्त मत पेटियाँ बदलकर सुजान हटाना, उसके बाद गाँव में भ्रष्टाचार बढ़ जाना इस पर प्रकाश डालते हुए लेखिका द्वारा कहना, ''सुजान के हटते ही गाँव का कार्यतंत्र बदल गया। घूसखोरी और भ्रष्टाचार ने जन्मे ले लिया। चोरी, राहजनी और कत्ल की वारदातें होने लगी। मुकदमों में दलाली का धंधा जोर पकड गया। सब हो रहा था.... सभी सुजान के सामने।''[24] अगले चुनाव के वक्त भी पिछले चुनाव जैसा बर्ताव देखने को मिलता है जैसा - ''गाँव के बाचों - बीच समाज कल्याण की बिल्डिंग है फिर गाँव से दूर चुनाव-केंद्र क्यों ....? आँखों में अंगार दहक उठे। गाँव के दीन-हीन लोग दूक-छिप के सुजान के पास आने लगे ठाकूर , फिर वही... जो आपके टैम पर हुआ था.... पेटी बदला बदली.....।''[25] लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से बताना चाहा है कि,चुनाव केंद्र में भ्रष्टाचार आज कैसे बढने लगा है।

6.3.1 गरीबी की समस्या

मैत्रेयी पुष्पा की कहानियों में प्राय: मध्यवर्ग का चित्रण किया है। मध्यवर्ग हमेशा अपनी निर्धनता का शिकार बना हुआ है। आज भी मध्यम वर्ग अर्थ की समस्या से जूझता हुआ नजर आता है। आज कल लोग अर्थ को ही भगवान मानने लगे हैं। आदमी को जीने के लिए रोटी, कपडा और मकान की आवश्यकता होती है। यही खरीदने के लिए धन की आवश्यकता होती है। उसे पाने के लिए मनुषय ने सभी रिश्तों को तोड डाला है। कहा जाता है - ''बाप न भैया सबसे बडा रूपैया '' इसी आर्थिक स्थिति की समस्या को मैत्रेयी पुष्पाने अपने कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है।

'कृतज्ञ' कहानी ' चिन्हार ' कहानी संग्रह से ली है। कहानी में मुरली ने अपने पिताजी (हरीशंकर) को दिल्ली अस्पताल में दाखिल किया है, वह भी मुहबोले बेटे अनुपम के भरोसे लेकिन वह उनपर जादा ध्यान नहीं देता क्यों कि मुरली की आर्थिक परिस्थिति गरीब है। जब हरीश की माँ वसुधा के पास आती है, तो वह कहती है , ''बहू, जायतू धरलै। वहाँ अस्पताल में कहाँ ... कहूँ चोरी - चाकरी है, जाय। '' उन्होंने पुरानी घिसी मैली-सी जंजीर वसुधा के हाथ में धर दी। दवा-दारू में का पता कितने लगें?'' वे जंजीर की पूँजी पर आश्वस्त थीं।

सीढियाँ उतरते में उन्हें अनायास याद हो आया - ''बहू , एक भगौना होयगौ ? कोई कंडम सौ ... पुरानों...... । ''[26]

यहाँ पर बीमारी के वक्त भी आदमी के पास पैसों की कमी होने के कारण उसे कौन-कौन से, हालातों से गुजरना पडता है यहीं पता चलता है। इससे गरीबी की समस्या उभरकर सामने आती है। गरीबी में कोई किसी की सहायता नहीं करता इसे भी यहाँ स्पष्ट किया गया है।

'बोझ' कहानी 'ललमनानियाँ' कहानी संग्रह से ली है। कहानी में अक्षय के मम्मी-पापा काम के सिलसिले में घर से बाहर रहते हैं। अत: इसी वजह से अक्षय को बुरी आदतें लगती हैं। अक्षय की बार-बार क्रौश से शिकायतें आती है। उस समय अक्षय को पिताजी पीटते हैं और उसकी माँ को बताते हैं कि, ''तुम क्यों दुखी होती हो, वैसे ही आजकल क्या कम परेशान हो। ऐसा करते हैं, दूसरे क्रैश में डाल देंगे। इन मैडम जी का तो दिमाग ही सातवें आसमान पर रहता है। अमीरों के बच्चे जो आते हैं यहाँ। यहाँ को फीस भी इतनी है कि... । ''[27] अक्षय की माता-पिता की यहाँ पर कमजोरी (गरीबी की) दिखायी देती है। साथ ही अपने बच्चे को अच्छे क्रैश में सिखाने की इच्छा होते हुए भी पैसों की वजह से उसे दूसरे स्कूल(क्रैश)में डालने की सोचते हैं। इससे उनकी गरीबी की समस्या सामने आती है।

6.3.2. यौन - संबंधों की समस्या

स्त्री की तरफ पुरूष एक भोग्या के रूप में ही देखता है। उसके प्रति देखने की किसी भी पुरूष का नजरीया अच्छा नहीं होता यह हमें **'आक्षेप '** कहानी के माध्यम से देखने को मिलता है। रमिया हर व्यक्ति की मदद के लिए किसी भी वक्त घर से बाहर जाया करती, नीस्वार्थी भाव से सिर्फ भागी - दौडी जाकर मदद करती। उसके मन में कोई भी पाप नहीं था, वह गैर औरत नहीं थी लेकिन समाज उसका ऊल्टा अर्थ लेता था। उसे अच्छे नजरिये से कोई भी नहीं देखता था। सिर्फ वह एक स्त्री है यही दृष्टिकोन से सभी उसे देखते थे और यहाँ पर यही यौन समस्या बनकर सामने खड़ी होती है।

6.4.1. परंपरा टूटन की समस्या

आचार-विचार का ही दूसरा नाम संस्कृति है। ये आचार-विचार बुद्धि तथा अनुभव जन्य ज्ञान की भित्ति पर आश्रित होते हैं। संस्कृति के बारे में केशव देव शर्मा कहते हैं, "संस्कृति अत्यंत व्यापक एवं, महत्वपूर्ण विषय है। इसके अंतर्गत मानव के विभिन्न धार्मिक सिद्धांतों तथा मान्यताओं, सामाजिक नियमों व परंपराओं, अर्थ व्यवस्थाओं, राजनीतिक संघटनों, भोजन- निवास व आचार-विचार सम्बधि वैषम्यपूर्ण मान्यताओं का समावेश परिलक्षित होता है।"[28] भारत देश में संस्कृति को बेहद महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय संस्कृति का वास्तविक रूप हमें ग्रामीण समाज में ही देखने को मिलता है।

'ललमनियाँ' शीर्षक कहानी ग्रामांचल में परंपराओं पर लोगों की काफी श्रध्दा होती है परंतु आज परिवर्तित समाज जीवन में परंपराएँ टूटती जा रही है। इसका तथ्य कहानी में मौहरों की माँ ललमनियाँ का नाच दिखाती है। उसे वह बहुत पूजती है। अपना पेट उसीसे भरती है। जहाँ कहीं गाँव में शादी हो वह तुरंत वहाँ जाती और नाच कर वहाँ से जो कुछ देते वह लेकर वापस चली आती है। लेकिन बदलते समय पर लोगों को कुछ नया

चाहिए था। माँ जब एक शादी में नाचने के लिए जाती है उस वक्त उसे रोका जाता है और कहाँ जाता है कि, "नीचे बाजे बज रहे थे। बरात में आयी लडकियाँ, घर की पढी-लिखी बहू - बेटियाँ आँचल- दुपट्टे फेंककर बेसुध होकर नाच रही थी, मर्दों की छाती से लगी, उनके कंधों पर झुकी ....

भोंपू चीख रहा था, "चुम्मा चुम्मा SS......... चुम्मा दे दे SS ...." [29] यहाँ पर हमें पुरातन काल से चली आ रही संस्कृति का ऱ्हास होते दिखाई देता है और आनेवाली पीढ़ी को नए का आकर्षण जादा है , ऐसा लगता है । यही पर ही सांस्कृतिक रिवाज घटते जा रहे हैं, यहीं समस्या सामने आ जाती है।

6.4.2. प्रचलित परंपराओं की समस्या

हमारे गाँव में आज भी कई ऐसी प्रथाएँ प्रचलित हैं जिन्हे लोग तोडना नहीं चाहते। अगर कोई भूल से भी इसे तोडने की कोशिश करता है तो उसे समाज वैसा करने नहीं देता। इतनाही नहीं तो उस व्यक्ति के सामने ऐसी शर्त रखी जाती है कि, उसे उस काम को स्थगिति देने के सिवाय उसके पास और कोई चारा ही नहीं रहता।

'रिजक' कहानी में लल्लन दाई का काम करती है। पहले वह दाई का काम माँ के बताने पर करती थी, लेकिन बाद में वह नर्स का कोर्स देकर वह काम गाँव के लिए करती थी। गाँव की कोई भी औरत उसे इस काम के लिए बुलाने आती तो वह दैडे चली जाती थी उनकी बिरादरी को वह जो काम करती वह पसंद नहीं था। वह कहते कि, "आसाराम बौराने लगा। बसोरों ने जिद ठान ली। कैसी जिद ? अपनी रोजी को ही लीला लेने की जिद ! बोले हमारी जनी मान सें बच्चा जानने घर-घर नही जाएंगी। नाल नहीं काटेंगी। बसोर की जाति है तो क्या हम गंदा काम करेंगे ? गंदगी उठाने को पैदा हुए है ?" [30]

लल्लन को बिरादरी का भय दिखाकर वह जो नेक काम कर रहीं है, उसे रोका जाता है। यहाँ पर बदलनेवालों को समाज बदलने नहीं देता यहीं हमारे सामने समस्या बनकर उभरती है।

संदर्भ ग्रंथ– सूची

1. संपादक श्री नवलजी - नालंदा विशाल शब्द सागर - पृ.1407
2. सं.सत्यपाल गुप्त - श्याम कपूर - अभिवनय पर्यायवाची कोश - पृ. 352
3. डॉ. विमल भास्कर - हिंदी में समस्या साहित्य - पृ. 90
4. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 105
5. वही पृ. 16
6. वही पृ. 129
7. वही पृ. 21
8. वही पृ. 61
9. वही पृ. 100
10. बिंदु (डॉ.) - हिंदी उपन्यासों में नारी-चित्रण - पृ. 327
11. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 55
12. वही पृ. 55
13. वही पृ. 17
14. वही पृ. 22
15. वही पृ. 85
16. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 108
17. डॉ. शंकर शेष - एक और द्रोणाचार्य - पृ. 15
18. राम आहूज - भारतीय सामाजिक व्यवस्था - पृ. 61
19. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 25
20. वही पृ. 148

21. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 41

22. वही पृ. 132

23. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 40

24. मैत्रेयी पुष्पा - चिन्हार - पृ. 68

25. वही पृ. 72

26. वही पृ. 90

27. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 90

28. केशव देव शर्मा - आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष - पृ. 238

29. मैत्रेयी पुष्पा - ललमनियाँ - पृ. 141

30. वही - पृ. 76